दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL4**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Anil

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [ ] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): ____________

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: ____________

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anil

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 134

टिप्पणी (Remarks): अन्यथा प्रयास अशुद्धियों पर ध्यान दें उत्तर अपेक्षित

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) हरिमुख निरखि निमेख बिसारे।
ता दिन तें मनो भए दिगंबर इन नैनन के तारे।।
घूँघटपट छाँड़े बीथिन महँ अहनिसि अटत उघारे।।
सहज समाधि रूपरुचि इकटक टरत न टक तें टारे।।
सूर, सुमति समुझति, जिय जानति, ऊधो! बचन तिहारे।
करै कहा ये कह्यों न मानत लोचन हठी हमारे।।

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ 'सूरदास' द्वारा रचित 'भ्रमरगीतसार' से ली गई हैं।

व्याख्या → गोपियाँ कृष्ण के प्रति अपने विरह को व्यक्त करते हुए कहती हैं कि कृष्ण ~~क्र~~ के दर्शन किए हुए कई दिन बीत गए। हमारी आँखें उनके दर्शनों की प्रतीक्षा कर रही हैं। जब भी वे घूँघट हटाती हैं, तो उनकी ~~*~~ यही इच्छा होती है कि कृष्ण ~~के~~ उनके सामने उपस्थित हों। वे समाधि लगाए जैसे कृष्ण की प्रतीक्षा कर रही हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उधो ~~तुम~~ तुम्हारे निर्गुण वचन हमें समझ में नहीं आते। हमारी आँखें तो कृष्ण का दर्शन ही चाहती हैं।

विशेष ⇒ (क) सुरदास जी ने गोपियों के विरह का अद्वितीय वर्णन किया है। विरह

(ख) ब्रजभाषा सरल एवं सहज रूप में आई है।

(ग) वर्तमान भोगवादी दौर में जहाँ प्रेम ने आर्थिक रूप धारण कर लिया है। ऐसी स्थिति में गोपियों का एकनिष्ठ प्रेम सुकून पैदा करता है।

अच्छा है।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) फिरि फिरि चितु उत ही रहतु, टुटी लाज की लाव।
अंग-अंग-छबि-झौरैं मै भयौ भौंरे की नाव।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ सूफी काव्यधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि 'मलिक मोहम्मद जायसी' द्वारा रचित 'पद्मावत' से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ जायसी ~~नागमती~~ के विरह का वर्णन करते हुए कहते हैं कि ~~नाग~~ नागमती अपने पति रत्नसेन के विरह में पीड़ित है। रत्नसेन सिंघल द्वीप दूसरा विवाह करने गया है किंतु नागमती अभी भी अपने पति के प्रति अपने प्रेम का वर्णन करते हुए कहती है कि मैं अले ही यहाँ ~~है~~ विचरण कर रही हूँ, किंतु मेरा चित्त अभी भी अपने पति की प्रतीक्षा में ही लगा हुआ है। वह अपने प्रेम का औदात्तपूर्ण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वर्णन करते हुए कहती है कि मैं अपने शरीर को समाप्त कर अपने पति की नाव बनता चाहती हूँ, जिससे वह शीघ्र ही वापस लौट आएं।

विशेष → (क) जायसी ने नागमती के विरह का अद्वितीय वर्णन किया है। ऐसा वर्णन हिंदी साहित्य में पुरुष गोपियों के अतिरिक्त कहीं देखने को नहीं मिलता।

(ख) अवधी भाषा सहज एवं सरल रूप में आई है। इसीलिए जायसी को अवधी का आदिकवि भी कहते हैं।

(ग) जायसी नागमती के माध्यम से मध्यकालीन नारी की दासतापूर्ण स्थिति का भी उद्घाटित किया है।

10/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त;
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावादी कवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' द्वारा रचित 'राम की शक्ति पूजा' से अवतरित हैं।

व्याख्या ⇒ राम युद्ध के दौरान जब देखते हैं कि शक्ति अर्थात दुर्गा रावण के साथ हैं, तो राम कहते हैं कि रावण, जो कि अन्याय का प्रतिनिधि है, जो दुर्गा उसका साथ दे रही हैं, जो कि उचित नहीं है, जबकि मैं न्याय के पक्ष में लड़ रहा हूँ, तब भी दुर्गा मेरा साथ नहीं दे रही हैं। ऐसे में जाम्बवंत राम को सलाह देते हैं कि यदि रावण अन्यायी होकर भी दुर्गा को अपने पक्ष में कर सका, तो हम को तो न्याय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के पक्ष में लड़ रहे हो अतः तुम्हारे पक्ष में दुर्गा अवश्य साथ देंगी। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि तुम भी रावण की तरह ही आराधना के करो और जब तक शक्ति प्राप्त न हो तब युद्ध को बंद कर दो।

विशेष → (क) निराला ने इन पंक्तियों के माध्यम से दर्शाया कि किसी भी प्रकार की नवीन शक्ति प्राप्ति के लिए आराधना आवश्यक है।

(ख) निराला ने राम का मानवीकरण कर दिया। उनमें द्वंद्व को दर्शाया है।

(ग) सूत्र शैली का प्रयोग। जैसे - शक्ति की करो मौलिक कल्पना।

(घ) खड़ी बोली का काव्य भाषा के रूप में सफल प्रयोग।

5 1/2
10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।
दुःख की पिछली रजनी बीच विकसिता सुख का नवल प्रभात,
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित आधुनिक महाकाव्य 'कामायनी' से ली गई है।

व्याख्या → श्रद्धा मनु से कहती है कि तुम्हें पुनः सृष्टि के सृजन के लिए प्रयास करने ही चाहिए। यदि तुम प्रयत्न नहीं करोगे, तो नवीन सभ्यता का विकास संभव नहीं है। मनु तुम चिंता छोड़ो क्योंकि दुःख की रात अब बीत गई है और एक सुनहरा भविष्य सामने दृष्टव्य है। ऐसे में तुम श्रद्धा से पुर्व होकर सभ्यता के पुनः निर्माण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के लिए प्रयास करे।

विशेष ⇒ (क) तत्सम शब्दों की बहुलता है, किंतु बोधगम्य है।

(ख) चिंता एवं शंका जैसे उदात्त भावों का वर्णन किया गया है।

(ग) भविष्य निर्माण के लिए कर्म को प्रधानता दी है।

$5\frac{1}{2}/10$

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) "धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिये सदा ही किया शोध!
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।"
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावादी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला द्वारा रचित लंबी कविता "राम की शक्तिपूजा" से ली गई है।

व्याख्या ⇒ जब राम दुर्गा की आराधना कर रहे थे और अंतिम स्थिति में जब दुर्गा कमल उठाकर ले गई, तो राम अपने आपको धिक्कारते हुए कहते हैं कि मैं हमेशा जीवन में विरोध ही पाया है। जब भी ~~कोई~~ किसी उद्देश्य प्राप्ति के लिए प्रयत्न किया, तो उसमें विरोध ही मिला। उन्हें इस बात का दुःख है कि अब रावण से सीता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को ढूंढना कठिन कार्य है। किंतु राम ऐसी स्थिति में भी हार मानने को तैयार नहीं हैं और आराधना पूरी करने के लिए अपनी आंख का अर्पण करने को तैयार हैं।

विशेष ⇒ (क) निराला ने खड़ी बोली को काव्यभाषा के रूप में न केवल स्वीकार किया, बल्कि इन पंक्तियों में व्यक्त समाहार समता, लयात्मकता से यह भी स्पष्ट हो गया कि खड़ी बोली में काव्य को किसी भी रूप में वर्णित किया जा सकता है।

(ख) यहाँ निराला के राम तुलसीदास के राम से अधिक औदात्यपूर्ण की स्थिति में है। तुलसी के राम 'नारी ~~हनि~~ हानि विशेष छति नाहीं' कहते हैं जबकि निराला के राम सीता के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं।

(ग) राम का मानवीकरण किया गया है।

5 1/2 / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

3. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी का विवेचन कीजिये। 20

'कामायनी' अर्थ धारण क्षमता के आधार पर एक संश्लिष्ट ~~अर्थ~~ रचना है। यह अनेक अर्थों को धारण करती है। प्रसाद जी कहते भी हैं — "यदि मनु और श्रद्धा अपने ऐतिहासिक अस्तित्व को ~~छ~~ खोकर बिना यदि, कोई अन्य अर्थ धारण करें, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"

'कामायनी' के विभिन्न अर्थों में से एक अर्थ- मानव - मन और मानवता के विकास की कहानी के रूप में स्वीकार किया गया है।

वस्तुतः जब व्यक्ति अपना सब - कुछ खो देता है, तो उसके मन में स्वाभाविक रूप से चिंता उत्पन्न होती है। यह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'कामायनी' के 'चिंता सर्ग' में वर्णित किया गया है। ~~वह~~ कुछ समय पश्चात वह श्रद्धा से पूर्ण हो होता है और कर्म करने की ओर उन्मुख होता। किशोर अवस्था में काम जैसी भावना उत्पन्न होना सामान्य बात है, किंतु ऐसे में उसमें लज्जा का भी भाव उत्पन्न होता है। वयस्क होने के पश्चात वह अधिकाधिक अधिकार चाहता है और इसी क्रम में उसका संघर्ष होता है। यह इड़ा सर्ग में वर्णित है।

यदि मानवता के विकास की बात करें, तो प्रारंभ में जटिल आदिम जीवन जी रहा था और जब वह संपन्न हुआ, तो उसे अपने सुख समाप्ति को लेकर चिंता हुई और इसी क्रम

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में एक सीमा के पश्चात श्रद्धा जैसे भाव जन्में। जब व्यक्ति ने अपने रचना कर्म के माध्यम से अत्यधिक साधन जुटाए, तो ऐसे में पूंजीवादी व्यवस्था उत्पन्न हुई और इसी ने लोकतांत्रिक व्यवस्था का जन्म हुआ। किंतु व्यक्ति में जब अधिकाधिक अधिकार भावना जागृत हुई, तो लोकतंत्र के भीतर से ही कालीवादी ताकतें मजबूत हुईं। इन ताकतों के बीच संघर्ष हुआ।

ये दोनों व्याख्याएँ रचना के दर्शन सर्ग तक की तो व्याख्या करती हैं, किंतु रहस्य सर्ग और आनंद सर्ग की व्याख्या करने में सक्षम नहीं है। किंतु यदि देखा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जाए तो आनंद सर्ग की व्याख्या भी संभव है। वस्तुतः प्रत्येक व्यक्ति अंततः आनंद ही प्राप्ति करना चाहता है।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि कामायनी मानव मन और मानवता की कहानी है।

अच्छा

11/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) अंगीरस की दृष्टि से कामायनी पर विचार कीजिये।

कामायनी के अंगीरस को लेकर विद्वानों में मतभेद है। वस्तुतः किसी भी रचना के अंगीरस का निर्धारण 'बहुव्याप्ति' के आधार पर होता है। किंतु 'प्रसाद' ने माना है कि उनकी रचना के अंगीरस का निर्धारण 'फलागम' के आधार पर होना चाहिए।

अंगीरस के रूप में मुख्यतः वीर, श्रृंगार एवं शांत रस को स्वीकार किया गया है। यदि कामायनी में देखें तो - श्रृंगार, वीर, वीभत्स इत्यादि रस उपस्थित है।

यदि बहुव्याप्ति की दृष्टि से देखा जाए, तो श्रृंगार रस अधिक मात्रा में विद्यमान है। रचना के पूर्वार्द्ध में संयोग श्रृंगार के माध्यम से मनु एवं श्रद्धा का वर्णन मिलता है, तो वहीं उत्तरार्द्ध में जब मनु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

श्रद्धा को छोड़कर चला जाता है, तो विप्रलंभ श्रृंगार देखने को मिलता है।

बहुव्याप्ति की दृष्टि से दूसरा रस 'शांत रस' है जो 'दर्शन' सर्ग तक उपस्थित है किंतु इन दोनों रसों को अंगीरस नहीं माना जा सकता क्योंकि ये दोनों रस न तो पूरी रचना में उपस्थित हैं और न ही ~~फलागम~~ की स्थिति में ~~सहायक~~ है।

ऐसे में यदि देखा जाए तो 'शैवाद्वैतवाद' या 'आनंदवाद' को ही 'कामायनी' का अंगीरस माना जा सकता है। जब व्यक्ति के ज्ञान, इच्छा और कर्म में समन्वन (समन्वय) स्थापित हो जाता है, तो शैवानंदवाद साथ प्राप्त होती है। जो

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सुख से भी आगे की स्थिति है। यह रस रचना के आनंदधर्म तक उपस्थित है। अतः यह फलागम में भी उपस्थित मिलता है। उदाहरण के लिए -

"समरस थे जड़ या चेतन, ~~आनंद~~ ~~आ~~ चेतना एक विलसती, आनंद अखण्ड घना था।"

अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि 'आनंदवाद' ही कामायनी का अंगीरस है।

अच्छा

8½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'राम की शक्ति पूजा' के रचनाकार 'निराला' छायावादी कवि हैं। छायावादी कवियों पर यह आरोप लगता है कि वे पलायनवाद एवं भावुकता जैसे तत्वों को अपनाते हैं। किंतु जब ~~विमर्श~~ निर्मला ~~जैसे~~ जैन ने अपने लेख 'शक्ति काव्य के प्रतिमान: राम की शक्तिपूजा' लिखा, तो यह कौतूहल का विषय बन गया। और समीक्षकों ने इसका विश्लेषण प्रारंभ किया।

राम की शक्ति पूजा का केंद्रीय बिंदु शक्ति ही है। वस्तुतः शक्ति काव्य के लिए कुछ प्रतिमान स्वीकार किए गए हैं जैसे- ओज गुण सर्वाधिक मात्रा में विद्यमान, शक्ति को प्राथमिकता दी जाए, नादात्मकता और

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ध्वन्यात्मकता की प्राथमिकता दी गई और महाप्राण ध्वनियों की बहुलता है।

यदि इन आधारों पर शक्ति पूजा का विश्लेषण करें, तो सभी तत्व इसमें मिलते हैं। इसमें ओज गुण विद्यमान है। इसके मुख्य चरित्र राम में ओज ~~है~~ विद्यमान है। उदाहरण के लिए -

"वह एक और मन रहा राम का जो न थका,
जो नहीं जानता दैन्य नहीं जानता विनय।"

इसके अतिरिक्त इसमें ~~शक्ति की प्रधानता दी गई है~~। 'अन्याय जिधर है, उधर शक्ति' के माध्यम से जहाँ को महत्वपूर्ण स्थान दिया है, तो वहीं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"शक्ति की मौलिक कल्पना" कविता कुरीतियों को दूर करने की बात कही गई है।

नादात्मकता और ध्वन्यात्मकता एवं महाप्राण ध्वनियों का व्यापक प्रयोग मिलता है। जैसे - ~~हनुमान~~ हनुमान के हँसने के लिए लिखा गया - "कपि की विषम हूह"। रावण के 'अट्टहास खलखल' का भी वर्णन किया गया है।

अतः स्पष्ट है ~~कवि~~ निर्मला जैन द्वारा प्रतिपादित "शक्ति काव्य का प्रतिमान : राम की शक्ति पूजा" पूर्णतः शक्ति पूजा में व्यस्त होता है। यह वास्तव में शक्ति पर ही केंद्रित है। हालाँकि यह अन्य अर्थों जैसे - सीता की मुक्ति, राष्ट्रीय आंदोलन इत्यादि को भी धारण करती है।

अच्छा

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) केवल नाराज़ ही नहीं, लड़ता था बाकायदा हमसे कि आप से पढ़े लिखे लोग खाली तमाशबीन ही बनकर बैठे रहेंगे तो इन गरीबों की लड़ाई कौन लड़ेगा? जहाँ दिन-दहाड़े इतना जुलुम होता हो, वहाँ कोई कैसे अलग-थलग बैठकर खाली कागज पोतता रह सकता है।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्यखण्ड नवलेखन के दौर की महान उपन्यासकार मन्नू भण्डारी द्वारा रचित राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से अवतरित है।

व्याख्या ⇒ जब मि. सक्सेना महेश से बिसू की मौत के बारे में पूछते हैं, तो ~~बिसू~~ महेश भावुक हो जाता है और पढ़े-लिखे वर्ग की संवेदनहीनता को उजागर करते हुए कहता है कि - बिसू उससे नाराज ही नहीं होता था बल्कि लड़ता भी था। उसका मानना था कि पढ़े लिखे व्यक्ति ही गरीबों को शोषण से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मुक्ति के लिए प्रयास नहीं करेंगे, तो फिर कौन करेगा। यदि कहीं पर किसी का शोषण होता रहे, और पढ़ा-लिखा वर्ग केवल अपने कार्यों में व्यस्त रहे, तो यह उचित नहीं है।

विशेष ⇒ (क) अग्रवाल जी मध्यवर्ग एवं पढ़े लिखे वर्ग पर व्यंग्य एवं करारी चोट की है।

(ख) भाषा सहज, सरल एवं पात्रानुकूल है।

(ग) अग्रवाल जी ने मध्यवर्ग एवं शिक्षित वर्ग को गरीबों को मुक्ति दिलाने में योगदान देने के लिए प्रेरित किया है।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रक्खा है, इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनि है।

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित ऐतिहासिक नाटक 'स्कन्दगुप्त' से ली गई हैं।

व्याख्या → नाटक की नायिका देवसेना कहती है कि पृथ्वी पर कण-कण में ईश्वर विद्यमान है। प्रकृति ने प्रत्येक व्यक्ति को ~~कोई~~ एक विशेष प्रयोजन हेतु रचा है, किंतु मनुष्य ने अपनी स्वार्थ पूर्ति पर बल दिया, जिसके कारण विश्व में अराजकता व्याप्त है। व्यक्ति शास्त्र के फेर में पड़ा है इसलिए उसके ~~स्वर~~ स्वर बेताल होते हैं। किंतु प्रकृति के प्रति सानिध्य रखने वाले पशु पक्षी के स्वरों में एक रागिनी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष → (क) इन पंक्तियों में 'नव्य वेदांत दर्शन' का वर्णन किया गया है।

(ख) भाषा तत्समी एवं बोधगम्य है।

(ग) वर्तमान में जब प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति के अनियंत्रित दोहन पर बल दे रहा है ऐसे में ये पंक्तियाँ उसे प्रकृति के साथ सहचर्य रखने की सीख दे रही है'।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हा! भारतवर्ष को ऐसी मोह निद्रा ने घेरा है कि अब इस के उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान-बूझकर सोता है उसे कौन जगा सकेगा? हा दैव! तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँका उधार लगवाता है।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्यखण्ड भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित 'भारत दुर्दशा' नामक नाटक से ली गई है।

व्याख्या ⇒ हरिश्चंद्र जी भारत की स्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि भारत को अब मोहनिद्रा ने घेर लिया है अर्थात् वह अनेक समस्याओं से ग्रस्त है, ऐसे में उसके पुनः उठने की सम्भावना सीमित है। वस्तुतः यदि भारत स्वयं अपनी समस्याओं के समाधान का प्रयास नहीं कर रहा है और यदि वह जानबूझकर निर्बल बना रहना चाहता है तो ऐसे में उसका कौन कल्याण कर सकता है!

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒ (क) प्रस्तुत पंक्तियों में ब्रिटिशकालीन भारत की स्थिति का वर्णन किया है और लोगों को देश के कल्याण के लिए प्रेरित किया है।

(ख) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

(ग) भारतेन्दु जी दर्शाना चाहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति स्वयं अपना पतन चाहता है, तो भाग्य भी उसका साथ नहीं देता। ऐसे में प्रत्येक को प्रयत्न करना चाहिए।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ऐसा आतंक आपने कहीं देखा नहीं होगा, साहब! लोगों के घर, ज़मीन और गाय-बैल ही रेहन नहीं रखे हुए हैं जोरावर और सरपंच के यहाँ, उनकी आवाज़ और जबान तक बंधक रखी हुई है। कोई चूँ तक नहीं कर सकता है।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ मन्नू भण्डारी द्वारा रचित राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से ली गई है।

व्याख्या ⇒ एस॰ पी॰ सक्सेना से अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा है कि गाँव में जोरावर का आतंक है। कोई भी उसका विरोध नहीं कर सकता। यदि कोई उसका विरोध करता है, तो उसका दमन कर दिया जाता है। जैसे- बिसू की हत्या कर दी गई। पूरे गाँव की जमीन, घर एवं गाय-बैल सभी जोरावर के यहाँ गिरवी रखे हुए हैं। जोरावर का पूरे गाँव में आतंक व्याप्त है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒ (क) ग्रामीण परिदृश्य में विद्यमान शोषण को उद्घाटित किया गया है।

(ख) सामंतवादी व्यवस्था कैसे ऋण के माध्यम से लोगों का शोषण करती है। यह भी दर्शाया गया है।

(ग) दलित जातियों की दयनीय स्थिति का वर्णन है।

(घ) भाषा सरल एवं सहज है।

बेहतरीन

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) यह तुम नहीं, तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है। स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं कि वह विवेक को ही खा जाए। अखबारों को तो आज़ाद रहना ही चाहिए। वे ही तो हमारे कामों का, हमारी बातों का असली दर्पण होते हैं। मेरा तो उसूल है कि दर्पण को धुंधला मत होने दो। हाँ, अपनी छवि देखने का साहस होना चाहिए आदमी में।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ 'मन्नू भण्डारी' द्वारा रचित राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ दा साहब, दत्ता बाबू से जो कि एक संपादक हैं, कहते हैं कि अखबारों को निष्पक्ष रहना ही चाहिए। दा साहब ~~अपने~~ यहाँ अपने छापपन ~~का~~ के माध्यम से अपना ~~वास्त~~ वास्तविक चरित्र उजागर नहीं होने देते और वे अखबारों की ~~स्वा~~ स्वाधीनता की बात करते हैं। उनका मानना है कि अखबारों को सरकार की आलोचना करते ही रहना चाहिए, जिससे सरकार अधिक जनोन्मुखी हो सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वास्तव में मीडिया सरकार के लिए आईना होती है। जो उसे उसके कार्यों की वास्तविक स्थिति का वर्णन करती है। उसे निष्पक्ष होना ही चाहिए।

विशेष ⇒ (क) इन पंक्तियों में लेखिका ने मीडिया की स्वतंत्रता की वकालत की है।

(ख) मन्नू जी दा साहब के 'घाघपन' को उजागर करती हैं कि किस प्रकार एक व्यक्ति अप्रत्यक्ष रूप से अपनी बात को कह देता है।

(ग) वर्तमान की विकास मीडिया पर यह कथन व्यंग्य है और उसे निष्पक्ष होने के लिए प्रेरित करता है।

(घ) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) "लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग देने का प्रयास किया है।" -दिव्या के संबंध में अपनी इस स्वीकारोक्ति के निर्वाह में यशपाल कहाँ तक सफल हो गए हैं? युक्तियुक्त उत्तर दीजिये। 20

'दिव्या' उपन्यास के प्राक्कथन में यशपाल ने स्पष्ट किया कि उन्होंने दिव्या उपन्यास की रचना के ~~उपन्यास~~ इतिहास का केवल वातावरण ~~के~~ स्वीकार किया है और सभी कुछ काल्पनिक है।

यदि हम 'दिव्या' में ऐतिहासिकता की बात करें तो उसमें कुछ चरित्रों जैसे - पुष्यमित्र, पतंजलि, मिलिन्द इत्यादि का नाम आया है और इसके अतिरिक्त कुछ ऐतिहासिक शहरों - सागल, मगध, मद्र का उल्लेख मिलता है।

यशपाल के यहाँ ऐतिहासिक चरित्र केवल सूचना के आधार पर विद्यमान ~~के~~ हैं जैसे - पुष्यमित्र को वर्णाश्रम धर्म का संरक्षक माना गया है और जब रुद्रधीर को दो सहस्र देश निकाला की सजा दी जाती है, तो उसे पुष्यमित्र से सहायता की सलाह दी जाती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पतंजलि का इतिहास में भी वर्णन मिलता है। उन्हें वैयाकरण का ज्ञाता बताया गया है। किंतु दिव्या में उन्हें वर्णाश्रम धर्म का संरक्षक और पुष्यमित्र का मंत्री बताया गया। दिव्या में देव शर्मा, रुद्रधीर को पुष्यमित्र से शिक्षा ग्रहण करने का सुझाव देता है।

मिलिंद भी ऐतिहासिक चरित्र है, जिसने नागसेन से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था। दिव्या में केवल इसकी सूचना ही मिलती है।

सागल, मथुरा और प्रयाग जैसे स्थान इतिहास में कला एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध थे और यहाँ खूब व्यापार होता था। अतः दिव्या में इनका भी वर्णन मिलता है।

किंतु यशपाल ने दिव्या में इतिहास का वातावरण लिया है। इसके अतिरिक्त

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सभी कुछ कल्पनाओं पर आधारित है। इस उपन्यास की मुख्य चरित्र 'दिव्या' उनकी कल्पना की सृजन है। जिसके माध्यम से उन्होंने नारी शोषण, दास व्यवस्था, इत्यादि को उद्घाटित किया है।

इसी प्रकार उन्होंने इतिहास का उपयोग उपयोगितावादी दृष्टिकोण से किया, जिससे वह लोगों को इतिहास में विद्यमान समस्याओं के प्रति जागरूक करते हुए भविष्य के प्रति सचेत करें। उन्होंने पृथुसेन के माध्यम से वर्णव्यवस्था पर चोट की है। जब पृथुसेन कहता है कि - "निम्न वर्ण अपराध है, तो इस अपराध का मार्जन किस प्रकार, शस्त्र की शक्ति से, शास्त्र की शक्ति से या धन की शक्ति से।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशपाल ने ऐतिहासिक वातावरण लेकर दास समस्या को भी उद्घाटित किया है। वह दासियों के संबंध में लिखते हैं कि दासियों का अपने बच्चों पर भी अधिकार नहीं है + "वे प्रत्येक अठारह मास पश्चात बच्चों को जनती थी, प्रभुल उनका व्यापार न कर उनके बच्चों का व्यापार करता था।"

यशपाल ने 'मारिस' के माध्यम से कई समस्याओं पर कुठाराघात भी किया है। वह कहता है - नारी को प्रकृति ने भोग्य नहीं, समाज ने भोग्य बनाया है।" वह नारी को सृष्टि का रूप मानता है और परलोकवाद का खण्डन करते हुए इहलोकवाद पर बल देते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि यशपाल ने ऐतिहासिक वातावरण लेकर कल्पनाओं के माध्यम से वर्तमान की समस्याओं को उद्घाटित कर उनका समाधान प्रस्तुत किया है।

अच्छा

11½/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नायकत्व की दृष्टि से 'मैला आँचल' पर विचार कीजिये। 15

मैला आँचल को यदि किसी कारण से सर्वाधिक प्रसिद्ध माना जाता है, तो वह है उसकी नायत्व संबंधी नवीन दृष्टि। वस्तुतः भारतीय में औदात्तपूर्ण ~~नाटक~~ नायक की प्राचीन परंपरा रही है। इस औदात्तपूर्ण नायक की परंपरा को सर्वप्रथम प्रेमचंद ने अपने उपन्यास ~~में~~ 'गोदान' ने निम्न वर्ग के ~~अ~~ नायक 'होरी' का सृजन कर तोड़ा। रेणु ने इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए 'अंचल' को ही नायकत्व प्रदान कर दिया।

नायकत्व

वस्तुतः नायक के संबंध में माना जाता है कि वह संपूर्ण रचना के केंद्र में रहे और रचना के सृजन उसी के इर्द-गिर्द हुआ हो। ~~यदि~~

नायकत्व यदि मैला आँचल के नायत्व के संबंध में चर्चा करें, तो व्यक्ति के आधार पर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

डॉ० प्रशान्त, बालदास और कालीचरण में से किसी एक को नायक के तौर पर स्वीकार किया जा सकता है। किंतु इनमें से भी किसी को भी नायक नहीं माना जा सकता, क्योंकि एक तो इनमें से किसी एक के इर्द-गिर्द पूरी रचना नहीं घूमती और ये चरित्र कई स्थानों पर कमज़ोर प्रतीत होते हैं।

ऐसे में 'अंचल' ही नायकत्व के तत्वों को धारण करता है। रेणु प्रारंभ में ही स्पष्ट करते हैं - "यह है 'मैला आँचल', एक आंचलिक उपन्यास"। रेणु ने पूरे उपन्यास का सृजन एक अंचल विशेष के आधार पर ही किया है। वे सर्वप्रथम अंचल के नायक 'मेरीगंज' की बाह्य स्थितियों का वर्णन करते हुए कहते हैं -

"यह है मेरीगंज, रोहतर स्टेशन से सात कोस पूरब में, बूढ़ी कोशी को पार करके जाना होता है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इसी प्रकार उन्होंने मेरीगंज की आंतरिक स्थिति को भी वर्णित किया है। रेणु लिखते हैं – "मेरीगंज एक बड़ा गाँव है, यहाँ बारहों बरन के लोग रहते हैं।" रेणु मेरीगंज की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का व्यापक वर्णन करते हैं।

उन्होंने मेरीगंज के सांस्कृतिक तत्वों को व्यापक तौर पर उभारा है। उन्होंने 'जाट-जटिन' नृत्य, भउजिया के गीत आदि का वर्णन किया है। उदाहरण के लिए –

"रात जो आवे बेटी प्यारी सुरतिया रे, शाले कोजबा में तीर जी।"

उन्होंने भाषा को गाँव के अनुकूल स्वीकार किया है। जैसे – गमकऊआ, गमगम, भैंसचरमन इत्यादि।

अतः हम कह सकते हैं कि रेणु ने नायक की पारंपरिक को अस्वीकार करते हुए 'अंचल' को ही नायकत्व प्रदान किया है।

अनुच्छेद पर ध्यान दें

अच्छा 8½ / 15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'मैला आंचल' के नामकरण पर विचार करें। क्या आप इस उपन्यास का इससे बेहतर नाम सुझा सकते हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी उपन्यास का नामकरण इस आधार पर किया जाता है कि वह ~~उपन्यास~~ नाम उस रचना के संपूर्ण कथ्य को व्यक्त करने में सक्षम हो। ऐसे में प्रश्न उठता है कि क्या 'मैला आँचल' नाम उपयुक्त है?

यदि इस उपन्यास का नाम किसी चरित्र के आधार पर रखा जाता है, तो इसका नाम 'बावनदास की कथा' या 'डॉ. प्रशान्त का योगदान' इत्यादि हो सकता था। किंतु यह उपन्यास चरित्र प्रधान उपन्यास नहीं है। इसलिए इन नामों को उचित नहीं माना जा सकता है। तो साथ ही ये नाम उपन्यास के संपूर्ण कथ्य को भी व्यक्त नहीं करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चूंकि रेणु प्रारंभ में ही स्पष्ट करते हैं कि 'यह है मैला आँचल, एक आंचलिक उपन्यास', ऐसे में इसका नाम किसी स्थान विशेष के तौर पर भी रखा जा सकता था। ऐसे में इसका नाम 'मेरीगंज का वर्णन' हो सकता है। किंतु यह भी उचित प्रतीत नहीं होता क्योंकि यह पूरी कथा व्यक्त नहीं करता है।

ऐसे में यही माना जा सकता है कि 'मैला आँचल' ही इस उपन्यास का सर्वश्रेष्ठ नाम है। क्योंकि इसके कई कारण है:-

आँचल का तात्पर्य अंचल से होता है। भारतीय परंपरा में माँ के आँचल को अत्यंत श्रद्धा भाव से देखा जाता है। और अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि को भी अंचल के तौर पर स्वीकार किया जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसके अतिरिक्त उन्होंने मैला शब्द इसलिए जोड़ा क्योंकि वह उपन्यास में अपने अंचल की समस्याओं को भी उद्घाटित करना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने इसे किसी स्थान विशेष का नाम इसलिए नहीं दिया क्योंकि उन्होंने इसे 'पिछड़े गाँवों का प्रतीक' माना है और संपूर्ण कथ्य का स्वरूप उसी (अंचल) के इर्द-गिर्द ही हुआ। चाहे वह भौगोलिक वर्णन हो या सांस्कृतिक पक्ष या ग्रामीण जीवन का वर्णन।

अतः हम कह सकते हैं कि 'मैला आंचल' सर्वश्रेष्ठ नाम है।

अच्छा

8½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'दिव्या' उपन्यास में मारिश के नारी-संबंधी दृष्टिकोण को प्रकट कीजिये। क्या यह दृष्टि उपन्यासकार यशपाल की नारी-दृष्टिकोण का भी प्रतिनिधित्व करती है? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

'दिव्या' उपन्यास नारी समस्या पर केंद्रित उपन्यास है। 'दिव्या' में यशपाल ने विभिन्न चरित्रों के माध्यम से नारी संबंधी दृष्टिकोण उद्घाटित किए हैं।

'प्रेस्थ' जैसे चरित्र जहाँ नारी को 'साधन' मानते हैं, जीवन का 'साध्य' नहीं। उसी प्रकार उन्होंने बौद्ध धर्म का दृष्टिकोण भी उजागर किया है, जो नारी को प्रवृत्ति मार्ग का साधन मानता है और नारी को त्याज्य मानता है। रुद्रधीर के माध्यम से उन्होंने पुरुषवादी सोच को उजागर किया है, जो कुलवधू, कुलमहादेवी जैसे शब्दों के माध्यम से नारी को पुरुष के अधीन कर लेना चाहता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

किंतु 'मारिस' जो कि चार्वाक दर्शन का प्रतिनिधि है, उसकी नारी के संबंधी में दृष्टि भिन्न है। उसका मानना है कि - "नारी को प्रकृति ने नहीं बल्कि समाज ने भोग्य बनाया है।" नारी और पुरुष दोनों समान है और नारी पुरुष के अधीन नहीं है। नारी को वह उदात्त ~~का~~ स्थान ~~प्राप्त~~ प्रदान करते हुए उसे सृष्टि का रचयिता मानता है। उसका मानना है कि नारी को पुरुष का अपना साध्य नहीं मानना चाहिए बल्कि यदि दोनों संबंध में रहते है, तो पुरुष को भी अपने पुरुषत्व का त्याग करना चाहिए।

मारिस के नारी संबंधी दृष्टिकोण को देखकर यह प्रतीत होता है कि यशपाल ने मारिस के माध्यम

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

से अपने नारी संबंधी दृष्टिकोण को उद्घाटित किया है।

किंतु यदि 'दिव्या उपन्यास' का समग्रतः विश्लेषण किया जाए, तो यशपाल के नारी संबंधी कुछ विचार 'दिव्या' उपन्यास की मुख्य चरित्र 'दिव्या' के माध्यम से भी उद्घाटित होते हैं।

'दिव्या' के माध्यम से यशपाल दर्शाना चाहते हैं कि नारी को नर 'शरीर' जैसी स्वतंत्रता चाहिए और न दासियों जैसी परतंत्रता बल्कि नारी चाहती है कि उसे वस्तु के समान न समझकर व्यक्ति के रूप में स्थान प्रदान किया जाए। उसे अपने अस्तित्व को त्यागकर कुलदेवी, कुलवधू जैसे स्थान भी नहीं चाहिए। बल्कि नारी अपने अस्तित्व को बचाए रखते हुए पुरुष का साथ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

चाहती है, जो अपने पुरुषत्व को भी त्यागने को तत्पर हो।

अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि 'दिव्या' उपन्यास के माध्यम से यशपाल ने 'मारिस एवं दिव्या' के हेतु अपने विचारों को स्पष्ट किया है।

अन्त।

11/20

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मैला आँचल में निहित रेणु की राजनीतिक चेतना का उद्घाटन कीजिये। 15

रेणु लंबे अंतराल तक राजनीतिक आंदोलन से जुड़े रहे। ऐसे में यह स्वाभाविक ही था कि उनके सर्वश्रेष्ठ उपन्यास में राजनीतिक चेतना उभरती।

'मैला आँचल' स्वतंत्रता के पूर्व की रचना है। इसमें कॉंग्रेस, सोशलिस्ट और सीमित मात्रा में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का भी वर्णन मिलता है।

'मैला आँचल' के रेणु समाजवादी आंदोलन से जुड़े हुए थे। किंतु इसमें उन्होंने अपने दृष्टिकोण को तटस्थ रखा। रेणु ने कॉंग्रेस की कमियों को उजागर किया है। जैसे- बावनदास राजनीति में व्याप्त जातिवाद के संबंध में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कहता है कि अब से प्रत्येक व्यक्ति को अपने माथे पर राजपूत, दलित, कायस्थ इत्यादि लिखवा लेना चाहिए। इसी प्रकार 'दुलारचंद कापर' जैसे लोग, जो नेपाली लड़कियों का व्यापार करते हैं और तस्करी करता है वह अब कांग्रेस का बड़ा नेता है।

शेखु ने समाजवादी पार्टी का भी वर्णन किया है। समाजवादी पार्टी से जुड़े होने के कारण वह इसके प्रति कुछ नरम भाव रखते हैं, किंतु वह क्षेपित नजर नहीं आते। इस पार्टी की क्रांति चेतना सभी को आकर्षित करती है। यह जाति के आधार पर वर्गीकरण नहीं करती, बल्कि समाजवादी पार्टी आर्थिक आधार पर वर्गीकरण करती है। कालीचरण कहता है – "गरीब की कोई जाति नहीं होती है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किंतु रेणु ने समाजवादी पार्टी की कमियों को उजागर किया है। रेणु ने बताया कि समाजवादी पार्टी में भी जाति व्यवस्था विद्यमान है - "वासुदेव को मेरीगंज का प्रभारी इसीलिए बनाया गया है, क्योंकि वहां यादवों की संख्या अधिक है।" इसके अतिरिक्त समाजवादी पार्टी में कुछ अपराधी किस्म के लोगों जैसे - चोमा जार, चलितर कर्मकार इत्यादि का भी प्रवेश हो गया है।

रेणु ने आर. एस. एस. की शाखाओं का भी वर्णन किया है कि कैसे इन शाखाओं में व्यक्ति की सोचने की क्षमता सीमित होती है। और अब महीने में दो बार मनी ऑर्डर भेजने लगे हैं। इसके द्वारा भ्रष्टाचार भी उजागर किया है।

अतः कहा जा सकता है कि रेणु का राजनीतिक दृष्टिकोण तटस्थ है और उन्होंने सभी पार्टियों का वर्णन किया है।

अच्छा
8½/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' नाम में उपन्यास का पूरा सार सन्निहित है। आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'महाभोज' नाम पढ़कर पाठक के मन में कौतूहल उत्पन्न हो जाता है कि ~~कि~~ 'इस रचना का नाम महाभोज क्यों रखा गया है? वस्तुतः महाभोज से तात्पर्य होता है, जो कि किसी की मृत्यु के पश्चात दिया जाता है।

ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि 'महाभोज' किसकी मृत्यु का भोज है। वस्तुतः ~~बिसू~~ यह केवल बिसू की मौत का भोज नहीं है। बल्कि दत्ता बाबू ने अपनी ~~क~~ गिरवी रख दी है, ऐसे में उन्हें पेपर की आपूर्ति का कॉन्ट्रेक्ट मिल गया है और वे एक ~~बड़ी~~ पार्टी आयोजित करने वाले हैं।

वाले

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

रुचिरा

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

डी० आई० सिन्हा, आई० जी० बन गए हैं। सुकुल बाबू सबसे रैली करके रूबस हैं, जोरावर बच गया है और बिंदा की हत्या का प्रयास चल रहा है।

ऐसे में यह भारतीय लोकतंत्र, प्रशासनिक संरचना, निष्पक्ष मीडिया एवं राजनीति की हत्या का महाभोज है।

लेखिका इस महाभोज की सूचना प्रारंभ में ही दे दी हैं। ~~सब~~ "गिद्ध एक लावारिस लाश को नोंचकर खा रहे हैं।" यह वर्णन बिसू के संदर्भ में है। किंतु लेखिका शोषण को स्वीकार नहीं करती हैं, बल्कि उसके प्रति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विद्रोह चेतना भी जगाती है। वह 'दुर्निवार लपकती हुई अग्निलीक' के माध्यम से विद्रोह चेतना को बिसू को बिन्दा और बिन्दा से मिस्टर सक्सेना में हस्तांतरित करती है। महाभोज के अंत अंत में सक्सेना का 'अस्तित्वांतरण' होता है, जिसकी छटपटाहट मुक्तिबोध की रचना 'अंधेरे में' मध्यवर्ग में विद्यमान थी।

अतः महाभोज ~~इस~~ के नाम के माध्यम से पूरा कथ्य व्यक्त होता है, जो 'लावारिस लाश' से प्रारंभ होकर 'लपकती हुई अग्निलीक' के लिए, जो बिसू, बिन्दा तक ही नहीं रुकती, तक व्यक्त हुआ है।

अच्छा

8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation